कार्यशाला

उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति
चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ
६ नवम्बर २००८
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

आयोजक

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

सम्बद्ध महाविद्यालय शिक्षक संघ (गुआक्आ)

एवं

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सम्पादकीय

उच्च शिक्षा के उद्देश्य और स्वरूप पर निरन्तर विमर्श जारी हैं उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और मूल्य आधारित शिक्षा का पुनर्प्रतिष्ठा हेतु जद्दो–जहद् हो रही है। शिक्षा परिसर की संस्कृति, आदर्श शिक्षक, आचरण से शिक्षा देने की स्व प्रेरणा, बदलते सामाजिक परिवेश से प्रभावित विद्यार्थी आदि विषय आज विमर्श हेतु आवश्यक लगते हैं। उस कारण की खोज भी महत्वपूर्ण लगती है, जिसने उच्च शिक्षा के परम्परागत परिसरों को अराजकता के हवाले कर दिया है। ऐसे में अकादमिक गतिविधियाँ उच्च शिक्षा के परम्परागत परिसरों को अराजकता के हवाले कर दिया है। ऐसे में अकादमिक गतिविधियाँ उच्च शिक्षा परिसर से समाप्त सी हो गयी हैं। उच्च शिक्षा में प्रवेश, परीक्षा और मूल्यांकन पर प्रश्न चिह्न खड़े होने शुरू हो गये हैं। शैक्षणिक गुणवत्ता एक चुनौती के रूप में उभरी है। उच्च शिक्षा के परिसर, सामाजिक कार्यकर्ता, संवेदशील युवा, योग्य नागरिक निर्मित करने में कहाँ तक सफल हैं, यह मूल्यांकन का विषय है।

गुवाक्टा के पदाधिकारीगण, प्राचार्य/शिक्षक मित्रों के बीच बातचीत में बार–बार महसूस हुआ कि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय और उससे सम्बद्ध महाविद्यालयों के सन्दर्भ में शिक्षा परिसर, शैक्षिक गुणवत्ता, प्राचार्य/शिक्षक की भूमिका आदि पर स्वयं के द्वारा गम्भीर चिन्तन–मनन की आवश्यकता है। यह प्रश्न आज हमें मथ रहा है कि क्या हम चाहें तो स्थिति में परिवर्तन आ सकता है? अथवा वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में कुछ भी ठीक करना सम्भव नहीं है। यह प्रश्न बार–बार हम सबको उद्वेलित करता है। इसी प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करने का निश्चय किया गया। इस कार्यशाला में सन्दर्भित विषय को एक आधार प्रदान करने हेतु कुछ चुने हुए शिक्षाविद्, प्राचार्य एवं शिक्षक विचार–विमर्श हेतु आमंत्रित किये गये।

प्रातः 9.30 बजे से प्रारम्भ कार्यशाला सायं 5.30 बजे तक अनवरत चलती रही। कार्यशाला में आये प्राध्यापक, छात्र एवं शिक्षाविदों ने पूरे दिन भर जिस सक्रियता से उच्च शिक्षा के सन्दर्भित विषयों पर मथते रहे। सबकी बेचैनी, मन की पीड़ा को शब्द मिले। महसूस हुआ कि उच्च शिक्षा के वर्तमान स्वरूप पर सभी व्यथित हैं। कार्यशाला के समय ही मन में आने लगा कि कार्यशाला की कार्यवाही को प्रकाशित करना चाहिए, जिससे कि एक स्वस्थ बहस को आगे भी चलाया जा सके और उच्च शिक्षा के बिगड़े हालात पर जागरूकता पैदा कर उसे यथासम्भव देशानुकूल एवं युगानुकूल बनाया जा सके। कार्यशाला में आये हुए सभी प्रतिनिधियों की इच्छा और उनकी सक्रियता ने हमें इस प्रकाशन हेतु प्ररित किया। मुझे विश्वास है कि 'उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ' विषय पर सम्पन्न कार्यशाला के कार्यवृत्त के प्रकाशन से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 'परिवर्तन' चाहने वालों को एक आधार और कुछ दृष्टि मिलेगी।

(डॉ. प्रदीप राव)

उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

विचार–विमर्श हेतु परिकल्पना/दृष्टि

प्रथम सत्र : उच्च शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम

उद्देश्य	व्यक्तित्त्व विकास में चिन्तन प्रक्रिया का विकास। सामाजिक–राष्ट्रीय विशेषताओं तथा समस्याओं की जानकारी एवं उसके प्रति जागरूकता। राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे नित–नूतन परिवर्तन से रू–ब–रू कराना। क्षेत्रीय स्तर पर शैक्षिक–सामाजिक–आर्थिक –राजनीति आदि व्यवस्थाओं–विचारों में युगानुकूल जागरूकता पैदा करना। सभी विषयों में शोध और उसका क्रियान्वयन अथवा उपयोग।
पाठ्यक्रम	उपरोक्त साहित अन्य सम्भावित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए। गोरखपुर विश्वविद्यालय के लगभग सभी विभागों अथवा विषयों के पाठ्यक्रम बीसों वर्ष पुराने हैं। पाठ्यक्रमों मे अद्यतन शोध एवं तथ्यों का पूर्णतः अभाव है। स्थानीय अथवा क्षेत्रीय समस्याओं को पाठ्यक्रम में कोई स्थान नहीं। उदाहरणार्थ इस क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था, सामाजिक स्थिति और परिवर्तन, पर्यावरण सहित क्षेत्रीय विकास से सम्बन्धित विषय पाठ्यक्रम में नदारद हैं।
समाधान	विश्वविद्यालय लगभग स्वायत् संस्था है। पाठ्यक्रम समिति, संकाय समिति, विद्या परिषद, विश्वविद्यालय की स्वायतशासी समितियाँ हैं। प्रत्येक विषय से सम्बन्धित विभागों की स्वायत पाठ्यक्रम समिति है। विभागाध्यक्ष और प्राध्यापक यदि चाहें तो उपर्युक्त सभी समस्याओं का हल उनके स्तर पर सम्भव है। पाठ्यक्रम समिति की सक्रिय भूमिका उपर्युक्त समस्त समस्याओं का समाधान है।

द्वितीय सत्र : उच्च शिक्षा परिसर–स्वरूप, समस्या एवं समाधान

स्वरूप	सामान्यतः उच्च शिक्षा परिसर अराजक। भवन, दीवारें, फर्नीचर गंदे, धू–धूसरित फर्श। छात्र नेताओं के नेतृत्व में परिसर में भयाक्रान्त करता छात्रों का झुण्ड। पान–पुकार खाकर अल्हण की तरह चलते, मौज–मस्ती में एवं गप–शप करते अधिकांश प्राध्यापक।
समस्याएँ	अध्ययन–अध्यापन का माहौल प्रभावित।
समाधान	शिक्षा परिसर की समस्या पूर्णतः शिक्षण संस्थान की आन्तरिक समस्या है। कुलपति/प्राचार्य एवं प्राध्यापक चाहें तो यह स्थिति तुरन्त बदल सकती है। निम्न प्रयास करने होंगे– (क) प्रवेश मानक के अनुसार। (ख) परीक्षा और मूल्यांकन ईमानदारी से। (ग) कुलपति/प्राचार्य एवं शिक्षकों का गुरुता पूर्ण गरिमामय आचरण।

तृतीय सत्र : कुलपति/प्राचार्य, शिक्षक और शिक्षार्थी आदर्श एवं व्यवहार

भारत में गुरू ईश्वर से बड़ा माना गया है। गुरु और शिक्षक में बहुत अन्तर नहीं। माता–पिता के बाद युवा मन पर सर्वाधिक छाप शिक्षक के व्यवहार का पड़ता है। शिक्षक को ईमानदार, सहज–सरल, चरित्रवान, अध्ययनशील, चिन्तक और विचारक होना चाहिए। वह समाज का प्रतिमान है। छात्र–छात्राओं के लिए अनुकरणीय मानदण्ड है। कुलपति/प्राचार्य में निर्णय लेने की क्षमता, प्रशासनिक गुण और स्वयं मानक बनकर टीम भाव से कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए। संस्था के लिए समर्पित होना चाहिए परन्तु आज–

कुलपति — ईमानदार, सहज–सरल, अध्ययनशील और अपने विषय के ज्ञाता हैं। निर्णय लेने की क्षमता पर प्रश्न चिह्न खड़ा हुआ है। उदाहरणार्थ शैक्षिक कैलेण्डर ध्वस्त। वर्ष 2008 परीक्षा में नकल के आरोपी महाविद्यालयों के परीक्षाफल बिना किसी प्रभावी कार्रवाई के घोषित। छात्रावास के मरम्मत में लापरवाही एवं भ्रष्टाचार। तमाम प्रमुख पदों पर दागदार लोगों का बने रहना। सांध्य कक्षाएं समाप्त करना किन्तु उनके अध्ययन–अध्यापन हेतु त्वरित व्यवस्था न किया जाना। विश्वविद्यालय के एक विशिष्ट काकस के घेरे में। विश्वविद्यालय को समय न दिया जाना तथा अधिकांशतः गोरखपुर से बाहर रहना।

प्राचार्य — अधिकांशतः प्राचार्यों की भ्रष्टाचारी छवि। प्राध्यापकों के एक काकस के घेरे में। सामान्यतः अर्थोपार्जन जीवन का उद्देश्य और प्राचार्य बने रहने के लिए किसी सीमा तक समन्वय। स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के अधिकांशतः प्राचार्य प्रबन्धकों के कठपुतली, मजबूर और प्रभावहीन।

शिक्षक — अधिकांशतः वेतन के बारे में चिन्तिक (राजकीय एवं अर्द्धशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षक सर्वाधिक चिन्तित, स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की यह चिन्ता स्वाभाविक है। अवसर मिलने पर अधिकांशतः शिक्षक भी भ्रष्टाचार का हिस्सा बनता हुआ दिखता है। अधिकांशतः शिक्षकों द्वारा रटे–रटाये तथ्यों एवं वर्षों पुरानी डायरी से अध्यापन। अद्यतन शोधों की जानकारी नहीं, जानकारी रखने की रूचि नहीं, शोध आदि में रूचि नहीं। अधिकांशतः शिक्षकों का अध्यापन रूचि और मिशन नहीं, पेशा अथवा नौकरी है। जनवरी से मार्च 'आयकर' की गणित में परेशान। विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के प्रति भावात्मक एवं अपनेपन के सम्बन्ध का अभाव। परीक्षा कापियों के मूल्यांकन में घोर लापरवाही। कक्षाओं के अलावा अन्य शैक्षणिक कार्यों से विरत। स्वयं का जीवन 'मानक' नहीं।

उच्च शिक्षा के विद्यार्थी

आदर्श — अध्ययनशील, सीखने के प्रति ललक, आसमान छू लेने की तमन्ना, शीलवान, सद्गुणी और संस्कारवान। भाषा (एक, दो या तीन) का ज्ञान। इण्टरमीडिएट तक के पाठ्यक्रमों की सामान्य जानकारी। जीवनोद्देश्य जानने–समझने के प्रति ललक।

उल्लेखनीय — इण्टरमीडिएट के बाद छात्र–छात्राओं का अधिकांशतः मेधावी वर्ग प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कोचिंग संस्थानों में चला जा रहा है तथा कुछ गोरखपुर से बाहर लखनऊ–दिल्ली की ओर उच्च शिक्षा के अध्ययन हेतु। शेष बचे शिक्षार्थी दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में।

व्यवहार — भाषा का ज्ञान नहीं के बराबर हिन्दी पढ़ने–बोलने में ठीक किन्तु लिखने का अभ्यास नहीं। अंग्रेजी–संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं। विश्वविद्यालयी शिक्षा में आ रहे छात्र–छात्राओं को इण्टरमीडिएट तक के पाठ्यक्रमों को आधारभूत जानकारी भी नहीं। गाँव से आये छात्र–छात्राएँ सामान्यतः संस्कारवान किन्तु नगरों और गोरखपुर महानगर में पढ़ रहे छात्र–छात्राएँ लगभग पचास प्रतिशत अनुशासहीन, भौतिकवादी संस्कृति/चैनल संस्कृति के पोषक। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी पाना अथवा डिग्री प्राप्त करना।

समाधान — उच्च शिक्षा में शैक्षिक संस्कृति का सृजन कर शिक्षा परिसरों में आ रहे छात्र–छात्राओं को संस्कार, जीवनोद्देश्य और ज्ञानार्जन की दिशा में प्रेरित किया जा सकता है। किन्तु यह सब कुलपति/प्राचार्य, शिक्षक की इच्छा शक्ति, उनके आचरण एवं प्रयास पर निर्भर करेगा।

चतुर्थ सत्र : प्रबन्ध तन्त्र, शासन–प्रशासन की भूमिका

आदर्श — शिक्षा प्रदान करना सामाजिक एवं धार्मिक कार्य है तथा राज्य के लोग कल्याणकारी कार्य हैं शिक्षा पर किये गये आर्थिक व्यय का उद्देश्य आर्थिक लाभ नहीं होना चाहिए।

वर्तमान — शिक्षा व्यय को अनुत्पादक मानते हुए सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्था की उपेक्षा। शिक्षा का निजीकरण एवं व्यवसायीकरण। उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य गौड़ एवं अर्थोपार्जन मूल उद्देश्य। प्रबन्धक, शासन–प्रशासन सभी भ्रष्टाचारी छवि का स्पष्ट छाप। एक नये व्यवसाय के रूप में स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों की बड़ी संख्या में स्थापना।

समाधान — विश्वविद्यालय एवं शासकीय, अर्द्धशासकीय महाविद्यालयों में प्रबन्ध तंत्र एवं शासन–प्रशासन की नकारात्मक भूमिका के बावजूद यदि कुलपति/प्राचार्य, शिक्षक चाहें तो परिवर्तन सम्भव। परन्तु स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में प्रबन्धक एवं शासन–प्रशासन के गठजोड़ तथा भ्रष्टाचारी भूमिका के कारण कुछ भी ठीक हो पाना सम्भव नहीं दिखता।

डॉ. प्रदीप राव
संयोजक

कार्यशाला में महत्त्वपूर्ण व्याख्यान

प्रथम सत्र **9.30–11.00** **उच्च शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम**

प्रस्ताविकी
डॉ. श्रीभगवान सिंह, उपाध्यक्ष गुआक्टा

अध्यक्ष
प्रो. राधेमोहन मिश्र, पूर्व कुलपति, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
प्रो. रामअचल सिंह, पूर्व कुलपति, अध्यक्ष, उच्च शि.से.आ.उ.प्र.
डॉ. बलवान सिंह, उपाचार्य, भटवली डिग्री कालेज
डॉ. सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, भटवली डिग्री कालेज
डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
डॉ. शीला सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर

द्वितीय सत्र **11.30–1.00** **उच्च शिक्षा परिसर : स्वरूप, समस्या एवं समाधान**

अध्यक्ष
प्रो. रामअचल सिंह, पूर्व कुलपति, अध्यक्ष, उच्च शि.से.आ.उ.प्र.
प्रो. सदानन्द गुप्त, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
डॉ. सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, भटवली डिग्री कालेज
डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही
डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
डॉ. धनंजय सिंह, भटवली डिग्री कालेज, भटवली
डॉ. एस.के. सिंह, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.

तृतीय सत्र **2.15–3.45** **कुलपति/प्राचार्य, शिक्षक और शिक्षार्थी–आदर्श एवं व्यवहार**

अध्यक्ष
प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र, पूर्व कुलपति
प्रो. रामकृष्ण मणि त्रिपाठी, पूर्व आचार्य, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
डॉ. सतीश द्विवेदी, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
डॉ. राजशरण शाही, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
डॉ. नीरज सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
डॉ. के.डी. तिवारी, बी.आर.डी. पी.जी. कालेज, देवरिया
डॉ. ब्रजेश पाण्डेय, सन्त बिनोवा पी.जी. कालेज, देवरिया
डॉ. अमृतांशु कुमार शुक्ल, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
डॉ. श्रीभगवान सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर

चतुर्थ सत्र **4.00–5.30** **प्रबन्ध तन्त्र, शासन–प्रशासन की भूमिका**

अध्यक्ष
प्रो. रामकृष्ण मणि त्रिपाठी, पूर्व आचार्य, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.
प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र, पूर्व कुलपति
डॉ. सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, भटवली डिग्री कालेज, भटवली
डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य
डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य

आभार
डॉ. कृपा शंकर सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गो.

परिचर्चा में सहभाग

डॉ. अयज पाण्डेय, हीरालाल पी.जी. कालेज, सन्त कबीर नगर, खलीलाबाद
डॉ. पृथ्वीराज सिंह, ए.पी.एन.पी.जी. कालेज, बस्ती
डॉ. परमहंस त्रिपाठी, जे.बी.महाजन डिग्री कालेज, चौरीचौरा
डॉ. विजय प्रताप सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
डॉ. शैलेन्द्र पताप सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
डॉ. अरूण कुमार तिवारी, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
डॉ. भारती सिंह, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. गिरिजेश, बापू डिग्री कालेज, पीपीगंज, गोरखपुर
डॉ. गुणाकरनाथ तिवारी, शिवहर्ष किसान पी.जी. कालेज, बस्ती
डॉ. राजेश चन्द्र मिश्र, हीरालाल पी.जी. कालेज, सन्त कबीर नगर, खलीलाबाद
डॉ. विनायक धीरेन्द्र प्रताप सिंह, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर
डॉ. शिव बिहारी, पाण्डेय, पवित्रा डिग्री कालेज, मानीराम, गोरखपुर
डॉ. विजय कुमार चौधरी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. आर.एन. सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. शिवकुमार बर्नवाल, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. अलका श्रीवास्तव, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. शालिनी सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
लोकेश कुमार प्रजापति, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
श्रीमती कविता मन्ध्यान, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
पुरूषोत्तम पाण्डेय, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
सन्तोष कुमार, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. कृष्णदेव पाण्डेय, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. श्रीप्रकाश प्रियदर्शी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. राजेश शुक्ला, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
सत्य प्रकाश सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
डॉ. आरती सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
गरिमा सिंह, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्वतन्त्र नारायण त्रिपाठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
दीप नारायण त्रिपाठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर